International Journal of Humanities, Commerce and Education
Volume 2 | Issue 7 | July 2026 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i7.114

आचार्य पद्माकर के काव्य में निरूपित तत्कालीन लोकविश्वास एवम् मान्यताए

डॉ0 अल्पना सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, एस.बी.डी.पी.जी.कॉलेज, धामपुर, बिजनौर
Email: alpanahindi24@gmail.com

Received: 05 July 2026 | **Accepted:** 16 July 2026 | **Published:** 23 July 2026

Abstract (सारांश)

किसी भी देश की पहचान उसकी सभ्यता और संस्कृति से होती है। वैश्विक स्तर पर उसकी यही विशिष्टताएं उसे परस्पर एक दूसरे से अलग बनाती है। भारतीय संस्कृति विश्व भर में अपनी अलग स्थानीय विशेषताओं के कारण जानी–पहचानी जाती है। चूँकि किसी भी देश का साहित्य वहां की संस्कृति को संरक्षित करने के साथ ही प्रचारित और प्रसारित भी करने का अच्छा माध्यम होता है अतः यह आवश्यक है कि विविध काल के साहित्य का सांस्कृतिक दृष्टि से अनुशीलन किया जाए तथा शोध–दृष्टि से उसका मूल्यांकन किया जाए। प्रस्तुत शोध–पत्र का मूल उद्देश्य रीतिकाल और तत्कालीन कवि आचार्य पद्माकर के काव्य में निरुपित भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों, लोकविश्वासों और मान्यताओं का सूक्ष्मता से अवलोकन करना के साथ ही वर्तमान समय में तद्युगीन साहित्य के पुर्नपाठ के द्वारा उसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करने का प्रयास करना है।

मुख्य शब्द: *भारतीय संस्कृति, रीतिकाल, आचार्य पद्माकर, लोकविश्वास और मान्यताएं।*

प्रस्तावना

आचार्य पद्माकर रीतिकाल के प्रमुख कवि हैं। रीतिकालीन साहित्य को मुगलकालीन दरबारी काव्य कहकर उपेक्षित किया गया है। चूँकि रीतिकाल के अधिकांश कवियों को मुगल दरबार में संरक्षण मिला था और अधिकांश कवियों ने अपने राजाओं और आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के उद्देश्य से कविता का सृजन किया। यही कारण है कि इस कविता में अतिशय श्रृंगारिकता और सौन्दर्य का मांसल निरूपण मिलता है। किन्तु यह सिक्के का एक पहलू भर है । कला को कला की दृष्टि से देखने पर यह आरोप स्वतः ही निराधार सिद्ध हो जाता है। आचार्य पद्माकर के काव्य में भारतीय सांस्कृतिक तत्त्वों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने भारतीय लोक विश्वासों, मान्यताओं और उनकी व्याप्ति की महत्ता को समझा और बहुत सूक्ष्मता से उसे अपने काव्य में पिरोया है। वर्तमान समय में पद्माकर के साहित्य का पुनरावलोकन किया जाना आवश्यक है, जिससे नई पीढी पुनः अपनी संस्कृति को कलात्मकता के साथ समझ सके और उनसे जुड़ाव महसूस कर सके।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. रीतिकालीन कविता का सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन करना ।
2. आचार्य पद्माकर के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन करना।
3. आचार्य पद्माकर के काव्य में निरुपित लोकविश्वास का निरूपण करना।
4. आचार्य पद्माकर के काव्य में निरुपित भारतीय मान्यताओं का विश्लेषण करना।
5. वर्तमान समय में आचार्य पद्माकर के काव्य की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना

शोध विस्तार

मनुष्य के विकास के विविध आयामों में संस्कृति प्रमुख स्थान रखती है। जिसे प्रकाश में लाने का कार्य साहित्य करता है। साहित्य, समाज, धर्म, कला परस्पर पृथक होते हुए भी संश्लिष्ट हैं। मनुष्य न तो अकेले जीवित रह सकता है और न स्वयं ही प्रसन्न रह सकता है। वह ऐसे सम्बन्धों को ढूँढ़ता है जहाँ सच्चाई हो, एक दूसरे के प्रति सहानुभूति और मैत्री भावना हो परन्तु प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत लाभ और लोभ से संचालित इस संसार में ये ही सबसे दुर्लभ वस्तुएँ हो जाती हैं। मनुष्य में मनुष्यता का लोप सा हो जाता है, उसकी संवेदनाएँ कुण्ठित हो जाती हैं। समस्त भौतिक सुख–सुविधाओं के बीच भी मनुष्य अपने को नितान्त अकेला, खण्डित, परित्यक्त तथा टूटा हुआ पाता है, एक ओर विज्ञान और तकनीकी के बल पर प्रकृति पर मनुष्य का अधिकार बढ़ता जाता है परन्तु उसका भाव जगत पीछे छूटता जाता है।[1]

डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा ने तो साहित्य को संस्कृति का इतिहास कहकर उसे अतीत का प्रतिबिम्ब तथा अनागत का प्रदीप माना है। साहित्य वह माध्यम है जिसके द्वारा देश की संस्कृति एक सूत्र में बंधती है। साहित्य संस्कृति के विकास में सहायता प्रदान करता है तथा संस्कृति साहित्य को प्रेरणा प्रदान करती है। साहित्यकार परम्परावादी और प्रयोगवादी होता है। वह युग चेतना से प्रभावित

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJHCE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

होकर परातन के आधार पर संस्कृति तथा साहित्य का निर्माण करता है। मानव जीवन के लिए संस्कृति और साहित्य दोनों ही नितान्त आवश्यक हैं।[2]

आचार्य पद्माकर रीतिकाल के अन्तिम अलंकारवादी आचार्य कवि है। कवित्त का पूर्ण निर्वाह करते हुये सर्वरस निरूपण करने वाले आचार्यो में इनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि है। इन्होंने जिस कुशलता के साथ नायक नायिका भेद व श्रंगार का वर्णन किया, उसी कुशलता के साथ रस अंलकारादि का शास्त्रीय पद्धति से निरूपण किया। जिस निपुणता के साथ अपने आश्रयदाताओं का वीर रस से युक्त सजीव चित्रण किया उसी तल्लीनता के साथ भगवत भक्ति का भी वर्णन किया और अपनी आध्यात्मिक व धार्मिक भावनाओं का परिचय दिया।

यह एक तथ्य है कि रीतिकालीन कविता विवादों में रही है किन्तु फिर भी तत्कालीन परिस्थितियॉ हमेशा से शोध का विषय रही हैं। इस दृष्टि से पदमाकर के काव्य की उपयोगिता बढ़ जाती है। उनके काव्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का सजीव चित्रण हुआ है। अपने समय में सामाजिक जीवन में व्याप्त लोकविश्वास एवम् मान्यताओं को भी उन्होंने सजीवता से अपने काव्य में स्थान दिया है। 'सामाजिक जीवन में अनेक विश्वास एवं मान्यताएं होती हैं जो सिद्धान्तः निरर्थक हो सकती है, तर्क की कसौटी पर अस्तित्वहीन सिद्ध हो सेकती हैं, किन्तु परम्परा रूप में इनके प्रति आस्था चिरकाल से चली आ रही है। इनकी सैद्धान्तिक एवं तार्किक असारता पर बिना ध्यान दिये लोग अपने जीवन के अलौकिक व्यापारों में इन विश्वासों एवम् मान्यताओं को स्वीकार करते हैं।'[3] भारतीय संस्कृति व समाज प्रारम्भ से ही इसके प्रति आस्थावान रहे हैं।

प्रत्येक संस्कृति की अपनी अलग मान्यताएं और लोक विश्वास होते हैं। जिनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवेश से स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करता है। समय–समय पर साहित्य ने इसे सहेजने का कार्य किया है। रीतिकालीन कवियों ने भारतीय जन जीवन में व्याप्त मान्यताओं और मूल्यों को अपनी कविता में सूक्ष्मता से संजोया है। आचार्य पद्माकर ने तद्युगीन भारतीय लोकजीवन द्वारा प्रयुक्त होने वाले रीति–रिवाजो, मूल्यों–मान्यताओं, लोक–विश्वासों, पर्व, त्योहारों आदि का बहुत सुंदर चित्रांकन अपनी कविता में किया है । उनकी कविता में व्याप्त लोकविश्वास और मान्यताओं का विस्तारपूर्वक निरूपण आगे किया गया है ।

भारतीय संस्कृति लोक विश्वासों व मान्यताओं के प्रति प्रारम्भ से ही आस्थावान रही है। भविष्य में हाने वाली प्रत्येक सुखद या दुःखद घटना को भारतीय समाज में शकुन–अपशकुन से जोड़कर देखा जाता रहा है। ऐसी मान्यता है कि शकुन मंगलकारी होते हैं तथा अपशकुन अंमगलकारी। पुरूष का दायॉ अंग व स्त्री का बायॉ अंग फड़कना शुभ माना जाता है इसके साथ ही कहीं बाहर जाते समय सामने वाले की छींक को अशुभ संकेत मान लिया जाता है। पद्माकर के काव्य में इन सभी लोकमान्यताओं के प्रसंग कई स्थानों पर आये है। उनकी नायिका का बायॉ अंग फड़ककर उसके लिए प्रिय मिलन की शुभ सूचना देता है–

फरकि बामदृग बाम भुज, कहत यहै अलि आज
निरखि बसंत बिदेस तें है आवत बृजराज।[4]

पद्माकर की नायिका नायक के घर न्योंते में आयी है। उसको बुलाने के लिए उसके घर से सन्देश आता है। नायक गुरूजनों के समक्ष जाकर उसे रोकना उचित नहीं समझता है इसलिए जैसे ही नायिका जाने को उद्यत होती है वह छींकते हुए उसके सम्मुख आ जाता है इस तरह नायिका का जाना रूक जाता है–

''पाहुनो चाहै चल्यौ जबहिं
तबहिं हरि सामुहै छींकत आवै।''[5]

भारतीय समाज में यह विश्वास प्रचलित है कि भादों के चौथ के चॉद के दर्शन नहीं करने चाहिए। क्योंकि यह एक प्रकार से अपशकुन होता है और चौथ का चॉद देखने से कलंक लगता है। पद्माकर की नायिका ने नायक को यद्यपि अंक से नही लगाया किन्तु उसने भादौं सुदी चौथ का चॉद देख लिया है इसलिए उसे झूठा कलंक सुनना पड़ता है–

''भादौ सुदी चौथ को लख्यो मै मृग अंक
यातें झूठहु कलंक मोंहि लागिबे चहत है।''[6]

चौथ के चॉद का यह कलंक जन समुदाय को इतना अधिक भयभीत करता है कि वह इसके भय से बाहर ही नहीं निकलना चाहते है। सभी के मन में यह आशंका बनी रहती है कि यदि चौथ का चॉद दिख गया तो व्यर्थ कलंक लग जायेगा। ब्रज की गलियों में कहीं आते जाते कलंक न लग जाय यह आशंका चौथ का चॉद देखते ही पद्माकर की नायिका के हृदय में घर कर जाती है–

'लगै न कहुँ ब्रजगलिन में आवत जात कलंक
निरखि चौथ का चॉद यह सोचत सुमुखि संशक'[7]

पद्माकर की नायिका का हृदय सदैव शंका से ग्रस्त रहता है। उनकी 'गृहिणी का मनोविज्ञान भी देखने योग्य है। नायक विदेश जाने के लिए जैसे ही नायिका के सामने आता है कि (आने वाले समय की कठिनाइयों को याद करके) उसके विरह ताप से मोतियों का हार चटक जाता है, यह अशुभ है अतः यह संकेत है

भारतीय लोक जीवन में सदैव से ही अशोक के वृक्ष की महत्ता रही है। इसके नाम के ही आधार पर शोक हरने वाला माना गया है। तुलसीदास ने भी सीता जी के मुख से अशोक का यही स्वरूप चित्रित किया है कि 'सुनहुँ विनय मम विटप अशोका, सत्य नाम करू हरू मम शोका।' यही मान्यता पद्माकर के काव्य में भी पुष्ट हुई है कि 'कहत विरोधाभास तहँ झूठो तहॉ विरोध/जहँ अशोक तहॉ शोक बस है न सियहि निज बोध। पद्माकर के काव्य में तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेक मान्यताओं और लोकविश्वासों का उल्लेख हुआ है। भारतीय समाज में एक परम्परा यह भी है कि स्त्रियॉ अपने मुख से पति का नाम नही लेती हैं। रीतिकालीन समाज में भी यही लोक मान्यता दृढ़ता से स्थापित रही होगी इसी कारण पद्माकर ने लिखा है कि यह रीति बिना विराम के बहुत पहले से चली आ रही है कि स्त्रियों को अपने पति का नाम नहीं लेने को कहा जाता है–

'रीति यहै आगेहु तें चलि आई अभिराम
तिय कौं लैन कहयो नहीं अपने पिय को नाम।'[8]

इसी प्रकार अशोक के वृक्ष के बारे में यह विश्वास भी प्रचलित है कि यदि अशोक का वृक्ष पुष्पित न हो तो सौभाग्यवती स्त्री अपने पदाघात से उसे सौभाग्य मण्डित कर दे, तो वह वृक्ष फलने फूलने लगता है।[9] पद्माकर ने 'अशोक' का वर्णन अन्यत्र भी किया है– ''कहत विरोधाभास तहँ झूठो तहाँ विरोध जहँ अशोक तहँ शोक–बस है न सियहि निज बोध।''

सुयोग्य वर प्राप्ति–रीतिकालीन समाज में 'लोक में यह विश्वास था कि सुयोग्य वर प्राप्त करने के लिए पार्वती की पूजा करनी चाहिए। पद्माकर की 'नवल बाल' अत्यधिक चतुरा है। वह नायक 'नंदलाल' के साथ जाकर उमा की पूजा करके उस पर अपना मन्तव्य भी प्रकट कर देती है।[10]

पद्माकर के काव्य में तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेकों मान्यताओं व लोकविश्वासों का उल्लेख हुआ है। यह भी एक लोकविश्वास ही है कि यदि पतिव्रता पंच देवियों (तारा, मन्दोदरी, कुन्ती, द्रोपदी व अहिल्या) का स्मरण करें तो महापापों का नाश होता है–

तारा अरू मन्दोदरिहु कुंती द्रुपदसुताहू
सु अहिल्या के सुमिरतहि पातक नसत महाहु।' (पदमाभरण, पृ0–320)

इसी प्रकार अनेकों परम्परायें हैं जो भारतीय संस्कृति का प्रमुख अंग हैं। तत्कालीन परिवेश में 'लोक में यह विश्वास था कि सुयोग्य वर प्राप्त करने के लिए पार्वती की पूजा करनी चाहिए। पद्माकर की नवल बाल अत्यधिक चतुरा है। वह नायक नंदलाल के साथ जाकर उमा की पूजा करके उस पर अपना मन्तव्य भी प्रकट कर देती है।' वह अपने विवाह हेतु नायक को उमा के समक्ष ले जाती है– 'नवल बाल नंदलाल संग, निज विवाह के ताहिं/ आगम की विधि सों उमहिं पूजति मंदिर माहिं।'

भारतीय जीवन में ज्योतिष का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ हर महत्वपूर्ण कार्य ज्योतिष द्वारा विचार कराके ही सम्पन्न कराये जाते हैं। ज्योतिष विज्ञान ग्रहों के योग एवं नक्षत्रादि के अध्ययन पर आधारित है। भारतीय जीवन में ज्योतिष का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। ज्योतिष पर विश्वास होने के कारण हर महत्वपूर्ण कार्य की आलोचना शुभ मुहूर्त में की जाती है यहाँ प्रारम्भ से ही चाहे विवाह हो, द्विरागमन हो या कूपबापी निर्माण। यात्रा, युद्ध, सन्धि आदि सभी महत्वपूर्ण कार्य मुहूर्त शोधन और शुभ लग्न निर्धारण के पश्चात सम्पन्न किये जाते थे।'[11] पद्माकर ने हिम्मत बहादुर आदि आश्रयदाताओं के प्रसंग में ज्योतिष बुलाकर युद्धादि की साइत कुसाइत पूछे जाने का उल्लेख किया है।

रीतियुगीन समाज में जादू टोनों पर लोगों का विश्वास था। इसी टोने व टोटकों की सहायता से स्त्रियाँ पुरूषों को अपने अधीन करने में महारत हासिल करती थी। पद्माकर के काव्य में भी यथास्थान इस मान्यता का उल्लेख हुआ है। उनकी नायिका अपने प्रिय को अपने वश में करने के लिए वशीकरण मंत्र को अभिपूरित करना चाहती है–'मंत्र वसीकर बूझतहि/सुबस भयो पिय आइ।' और इसके परिणाम स्वरूप नायक उसके वश में हो जाता हैं। इसी प्रकार भारतीय जनमानस में एक और मान्यता यह भी है कि स्वप्न में देखी गई बातें सत्य हो जाया करती है। पद्माकर को भी इस विश्वास का भलिभाँति ज्ञान था। वह स्वप्न की बात को मिथ्या न मानने की मान्यता पर विश्वास करते हुए कहते है– 'क्यों करि झूठी मानिए, सखि सपने की बात/ जु हरि हस्यो सोवत हियो, सो न पाइयत पात।'

हमारे देश में वैदिक काल से ही व्रतों एवं त्योहारों का विशेष प्रचलन है। सामाजिक जीवन में इनकी विशेष महत्ता है, ये व्रत और त्योहार अध्यात्म से जुड़े होने के साथ–साथ वैज्ञानिक दृष्टि से भी अपना महत्व रखते हैं। यहाँ सभी त्योहार अत्यन्त हर्षोल्लास व प्रसन्नता के साथ मिल–जुल कर मनाये जाते हैं। भारतीय पर्वों की संख्या अनन्त है, इससे भारतीय लोकजीवन में व्याप्त चिरंतन उत्फुल्लता का भान होता है। त्योहार अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है कोई धार्मिक दृष्टि से सम्बद्ध होने के कारण तो कोई प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण, किन्तु सबके मूल में कार्य की एकरसता से लोकजीवन में उत्पन्न होने वाली नीरसता को दूर करने का प्रयोजन निहित होता है। रीतिकालीन कवियों ने युगीन परिस्थितियों के वशीभूत होकर उन त्योहारों का ही चित्रण अधिक किया है जो उनकी रसिक दृष्टि को अधिक तृप्त कर सकते हो। पद्माकर भी इसका अपवाद नहीं है।

भारतीय संस्कृति में परम्पराओं का पालन प्रमुख विशेषता है। भारतीय जनता अपनी प्राचीन परम्पराओं को अखण्ड रूप से सहेजती चली आ रही है। डॉ0 भक्तराज शास्त्री के अनुसार – ''आध्यात्मिक मानव प्रत्येक क्षेत्र में परम्परावादी होता है। पूर्वजों द्वारा प्रचलित मान्यताओं का वह विरोध नहीं कर पाता है। भारतीय परम्पराओं में शकुन–विचार का वर्णन मिलता है। दाहिना अंग फड़कना पुरुष के शकुन है।.....राजा दुष्यन्त का दाहिना हाथ फड़कना शुभ शकुन का परिचायक है। ययोधरा का बायाँ नेत्र फड़कना शुभ का परिचायक है।.....शादी के समय वर–वधू को अग्नि–परिक्रमा करने का विधान है। हाथों में चूड़ियाँ और भाल में सिन्दूर, सुहाग का प्रतीक है। कन्या के विवाहोपरान्त पिता उसके ससुराल का पानी नहीं पीता। अतिथि–सत्कार हेतु चौके पूरना, कदली के खम्भ बनाना, मंगल कलश रखना, तोरण बाँधना आदि अनेक विधानों का वर्णन है।'[12] समाज में व्याप्त यह रीति रिवाज मनुष्य जीवन में नई ऊर्जा प्रदान करते हैं

निष्कर्ष

किसी भी समाज में लोक विश्वास, मान्यताओं एवं परम्पराओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है। सामाजिक जीवन में इनकी विशेष महत्ता होती है। यद्यपि वर्तमान सदी में साहित्य की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाये जाते रहे हैं कि इस साहित्य के पठन–पाठन का उद्देश्य क्या है ? किन्तु यह निर्विवाद रूप ये कहा जा सकता है कि अपनी भावी पीढ़ियों में सांस्कृतिक मूल्यों के हस्तांतरण के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें साहित्य के पुनर्पाठ के द्वारा अपनी सांस्कृतिक लोक मान्यताओं से परिचित कराया जाए। आचार्य पद्माकर के काव्य में निरूपित इन सभी मान्यताओं के द्वारा हमें तद्युगीन सामाजिक परिवेश का पता चलता है। रीतिकालीन समाज में प्रचलित विश्वास, मान्यताएं, लोक परम्पराएं, शकुन–अपशकुन, स्वप्न–विचार, ज्येतिष पर विश्वास आदि सामान्य रूप से व्याप्त थे। पद्माकर के काव्य में इन सभी का सजीव चित्रण हुआ है।

सन्दर्भ

[1]. वाचस्पति इन्द्र, भारतीय संस्कृति का प्रवाह, पृ0–156, भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली, 1959
[2]. लूनिया बी0एल0, भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, पृ0–14, नारायन प्रकाशन आगरा, 1958
[3]. पाण्डेय जितेन्द्र नाथ, तुलसी के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन, , पृ0–150, अलका प्रकाशन, कानपुर,1995
[4]. पद्माकर, पद्माभरण, दोहा सं0–323, भारत जीवन प्रेस, बनारस, 1894
[5]. मिश्र आ0 विश्वनाथ प्रसाद, सं0–पद्माकर ग्रन्थावली, पृ0–148, नागरी प्रचारिणी सभा,काशी, वि0 2016
[6]. पद्माकर ग्रन्थावली, वही, पृ0 99
[7]. पद्माकर ग्रन्थावली, वही, पृ0.182
[8]. पद्माकर, पद्माभरण, वही, दोहा सं0 322
[9]. शर्मा ज्योतिसर, पद्माभरण : नव मूल्यांकन, पृ0 148, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1996
[10]. पद्माकर ग्रन्थावली, वही, पृ0–148,
[11]. प्रसाद, शशिप्रभा, रीतिकालीन भारतीय समाज, पृ0–315, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, 2007
[12]. शास्त्री डॉ0 भक्तराज, आधुनिक हिन्दी काव्य और संस्कृति, पृ0–174, चन्द्रालोक प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर, 1986

Cite this Article:

डॉ0 अल्पना सिंह. (2026). आचार्य पद्माकर के काव्य में निरूपित तत्कालीन लोकविश्वास एवम् मान्यताएं. International Journal of Humanities, Commerce and Education, 2(7), 25–28.

Journal URL: *https://ijhce.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i7.114*

Disclaimer/Publisher's Note: *The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.*